

उर उज्यादी (७४)

तेरी रूप माधुरी मनु मोहे जग मंगल साई सुखकारी।
रोम रोम नैन बनि छबि जोहे रसिक जननि उर उज्यारी॥

महा भाग्य शाली है मैया सुखदेवी जू तेरी
लड़ाती लाड़ जो निश दिन सदा रस प्रेम उरझेरी
फली फूली तपस्या है सुक्रत की बैलि जो बोई
वेदों की सार जो सम्पति मैया ने गोद में गोई
क्या अदभुत शोभा बांकी है यह प्यारी अनोखी झांकी है
लखि लालन के मुख पंकज को होते है सुखी सब नर नारी॥

सुनि सुनि तोतरे बैन सुवन के मन मुग्ध होता है माता का
पुनि पुनि अंचल छोर लिए धन्यवाद मनाती है विधाता का
प्रभू तेरी अहेतुकी कृपा से मेरी गोद में ऐसा लाल मिला
मानो मान सरोवर में सौरभ पूर्ण कमल खिला
मृदु मुस्कान लाल की मोहिनी है

बिन पलकनि यह छबि जोहिनी है
महा मोद में मेरा मन मग्न हुआ
सुनि श्रवण सुखद किलकारी॥

पूर्णमासी में यह पूर्ण है चंद्र मेरा अब उदय हुआ
जांके स्व प्रकाश से जग का अविद्या तिमिर नशाय गया
घर घर हर्ष हुलास की सरिता मधुर वेग से बहती है
सफल मनोरथ भए सबनि के आनंद बेला उलहई है

गुर कृपा जीवन मूड़ी है सुख आनंद से भरपूरी है
चिरु जीवे यह लाल मेरा जब लग गंग यमुन जारी॥

सब नर नारी मिल जुल के वाधाई देन आवत हैं
कुंवर जी बाल लीला को गगन में देवता गावत हैं
मधुर भक्ती का सब जग में पूर्ण प्रचार अब होगा
मिटेगा कलि कुलिश जन का बनेगा हरि मिलन योगा
यह मैगसि जन्म वाधाई है मन प्रसन्न श्री रघुराई है
वेगि बढ़े यह बालक प्यारा जो फूले कथा की फुलवाड़ी॥